श्री भैरव चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री भैरव संकट हरन,
मंगल करन कृपाल।
करहु दया निज दास पे,
निशि दिन दीनदयाल॥

॥ चौपाई ॥

जय डमरूधर नयन विशाला,
श्यामवर्ण वपु महाकराला।

जय त्रिशूलधर जय डमरूधर,
काशी कोतवाल संकट हर।

जय गिरिजासुत परम कृपाला,
संकट हरण हरहु भ्रमजाला।

जयति बटुक भैरव भयहारी,
जयति काल भैरव बलधारी।

अष्टरूप तुम्हरे सब गायें,
सफल एक ते एक सिवाये।

शिवस्वरूप शिव के अनुगामी,
गणाधीश तुम सबके स्वामी।

जटाजूट पर मुकुट सुहावै,
भालचन्द्र अति शोभा पावै।

कटि करघनी घुंघरू बाजै,
दर्शन करत सकल भय भाजै।

कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर,
मोरपंख को चंवर मनोहर।

खप्पर खड्ग लिए बलवाना,
रूप चतुर्भुज नाथ बखाना।

वाहन श्वान सदा सुखरासी,
तुम अनन्त प्रभु तुम अविनासी।

जय जय जय भैरव भय भंजन,
जय कृपालु भक्तन मनरंजन।

नयन विशाल लाल अति भारी,
रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी।

बं बं बं बोलत दिनराती,
शिव कहँ भजहु असुर आराती।

एकरूप तुम शम्भु कहाये,
दूजे भैरव रूप बनाये।

सेवक तुमहिं प्रभु स्वामी,
सब जग के तुम अन्तर्यामी।

रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा,
श्यामवर्ण कहुँ होइ प्रचारा।

श्वेतवर्ण पुनि कहा बखानी,
तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी।

तीन नयन प्रभु परम सुहावहिं,
सुरनरमुनि सब ध्यान लगावहिं।

व्याघ्र चर्मधर तुम जग स्वामी,
प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी।

चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा,
निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा।

क्रोधवत्स भूतेश कालक्षर,
चक्रतुण्ड दशबाहु व्यालधर।

अहहिं कोटि प्रभु नाम तुम्हारे,
जयत सदा मेटत दुःख भारे।

चौंसठ योगिनी नाचहिं संगा,
क्रोधवान तुम अति रणरंगा।

भूतनाथ तुम परम पुनीता,
तुम भविष्य तुम अहहू अतीता।

वर्तमान तुम्हारो शुचि रूपा,
कालमयी तुम परम अनूपा।

ऐलादी को संकट टारयो,
सदा भक्त को कारज सारयो।

कालीपुत्र कहावहु नाथा,
तब चरणन नावहुं नित माथा।

श्री क्रोधेश कृपा विस्तारहु,
दीन जानि मोहि पार उतारहु।

भवसागर बूढ़त दिनराती,
होहू कृपालु दुष्ट आराती।

सेवक जानि कृपा प्रभु कीजै,
मोहिं भगति अपनी अब दीजै।

करहुँ सदा भैरव की सेवा,
तुम समान दूजो को देवा।

अश्वनाथ तुम परम मनोहर,
दुष्ट कहँ प्रभु अहहू भयंकर।

तुम्हरो दास जहाँ जो होई,
ताकहँ संकट परे न कोई।

हरहु नाथ तुम जन की पीरा,
तुम समान प्रभु को बलवीरा।

सब अपराध क्षमा करि दीजै,
दीन जानि आपुन मोहिं कीजै।

जो यह पाठ करे चालीसा,
तापै कृपा करहु जगदीशा।

॥ दोहा ॥

जय भैरव जय भूतपति,
जय जय जय सुखकन्द।
करहु कृपा नित दास पे,
देहु सदा आनन्द॥

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल